सम्पादक की कलम से

जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत बताए भगवान महावीर तकरीबन ढाई हजार साल पहले (ईसा से 599 वर्ष पूर्व), वैशाली के गणतंत्र राज्य क्षत्रिय कुण्डलपुर में हुआ था। महावीर को 'वीर', 'अतिवीर' और 'सन्मति' भी कहा जाता है। तीर्थंकर महावीर स्वामी अहिंसा के मूर्तिमान प्रतीक थे। उनका जीवन त्याग और तपस्या से ओतप्रोत था। उन्होंने एक लँगोटी तक का परिग्रह नहीं रखा। हिंसा, पशुबलि, जात-पात का भेद-भाव जिस युग में बढ़ गया, उसी युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ। उन्होंने दुनिया को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया।

उन्होंने दुनिया को जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत बताए, जो हैं- अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य (अस्तेय) और ब्रह्मचर्य। सभी जैन मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका को इन पंचशील गुणों का पालन करना अनिवार्य है। महावीर स्वामी ने अपने उपदेशों और प्रवचनों के माध्यम से दुनिया को सही राह दिखाई और मार्गदर्शन किया। यद्यपि उनकी धर्मयात्राओं का ठीक वर्णन कहीं नहीं मिलता तो भी उपलब्ध वर्णनों से यही विदित होता है कि उनका प्रभाव विशेष रूप से क्षत्रियों और व्यवसायी वर्ग पर पड़ा, जिनमें शूद्र भी बहुत बड़ी संख्या में सम्मिलित थे।

महावीर अहिंसा के दृढ़ उपासक थे, इसलिए किसी भी दिशा में विरोधी को क्षति पहुंचाने की वे कल्पना भी नहीं करते थे। वे किसी के प्रति कठोर वचन भी नहीं बोलते थे और जो उनका विरोध करता, उसको भी नम्रता और मधुरता से ही समझाते थे। इससे परिचय हो जाने के बाद लोग उनकी महत्ता समझ जाते थे और उनके आंतरिक सद्भावना के प्रभाव से उनके भक्त बन जाते थे।

महावीर स्वयं क्षत्रिय और राजवंश के थे, इसलिए उनका प्रभाव कितने ही क्षत्रिय नरेशों पर विशेष रूप से पड़ा। जैन ग्रंथों के अनुसार राजगृह का राजा बिंबिसार महावीर का अनुयायी था। वहां पर इसका नाम श्रेणिक बताया गया है और महावीर स्वामी के अधिकांश उपदेश श्रेणिक के प्रश्नों के उत्तर के रूप में ही प्रकट किये गये हैं। आगे चलकर इतिहास प्रसिद्ध महाराज चंद्रगुप्त मौर्य भी जैन धर्म के अनुयायी बन गये थे और उन्होंने दक्षिण भारत में आकर जैन मुनियों का तपस्वी जीवन व्यतीत किया था।

उड़ीसा का राजा खाखेल तथा दक्षिण के कई राजा जैन थे। इसके फलस्वरूप जनता में महावीर स्वामी के सिद्धांतों का अच्छा प्रचार हो गया और उनके द्वारा प्रचारित धर्म कुछ शताब्दियों के लिए भारत का एक प्रमुख धर्म बन गया। आगे चलकर अनेक जैनाचार्यों ने जैन और हिंदू धर्म के समन्वय की भावना को भी बल दिया, जिसके फल से सिद्धांत रूप से अंतर रहने पर भी व्यवहार रूप में इन दोनों धर्मों में बहुत कुछ एकता हो गई और जैन एक संप्रदाय के रूप में ही हिंदुओं में मिल जुल गये।

महावीर स्वामी का सबसे बड़ा सिद्धांत अहिंसा का है, जिनके समस्त दर्शन, चरित्र, आचार-विचार का आधार एक इसी अहिंसा सिद्धांत पर है। वैसे उन्होंने अपने अनुयायी प्रत्येक साधु और गृहस्थ के लिए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के पांच व्रतों का पालन करना आवश्यक बताया है, पर इन सबमें अहिंसा की भावना सम्मिलित है। इसलिए जैन विद्वानों का प्रमुख उपदेश यही होता है- 'अहिंसा ही परम धर्म है। अहिंसा ही परम ब्रह्म है। अहिंसा ही सुख शांति देने वाली है। अहिंसा ही संसार का उद्धार करने वाली है। यही मानव का सच्चा धर्म है। यही मानव का सच्चा कर्म है। अहिंसा जैनाचार का तो प्राण ही है।'

जैनियों के आचार-विचार, अहिंसा के विषय में चाहे जैसे रूढ़िवादी बन गये हों, पर इसमें संदेह नहीं कि महावीर स्वामी ने अपने समय में जिस अहिंसा के सिद्धांत का प्रचार किया, वह निर्बलता और कायरता उत्पन्न करने के बजाय राष्ट्र का निर्माण और संगठन करके उसे सब प्रकार से सशक्त और विकसित बनाने वाली थी। उसका उद्देश्य मनुष्य मात्र के बीच शांति और प्रेम का व्यवहार स्थापित करना था, जिसके बिना समाज कल्याण और प्रगति की कोई आशा नहीं रखी जा सकती। यद्यपि अहिंसा का प्रतिपादन सभी धर्मोपदेशकों ने अपने-अपने ढंग से किया है, पर जिस प्रकार महावीर और बुद्ध ने अहिंसा पर सबसे अधिक बल देकर उसी को अपने धर्म का मूलमंत्र बनाया, ऐसा किसी अन्य धर्म संस्था ने नहीं किया।

सफाई कर्मचारी का काम एक ही जाति को दिया जाना बहुत बड़ा अभिशाप

हमारे देश में 9 करोड़ से अधिक वाल्मीकि हैं। लेकिन हर शहर, संस्थान और गांव में सफाई कर्मचारी के नाते वाल्मीकि ही क्यों मिलते हैं ? दुनिया में इससे बढ़कर अभिशाप किसी और जाति को मिला है कि जो जन्मते ही सफाई कर्मचारी बन जाये ?

बाबा साहेब अम्बेडकर का स्मरण सामान्यत: लकीर के फकीर बन कर किया जाता है। हर कोई अपने-अपने ढंग से उनको परिभाषित करता है। लेकिन इतना सत्य है कि दुनिया में सबसे ज्यादा उद्धृत किये जाने वाले महापुरुषों में अम्बेडकर हैं जिन्होंने साधारण से असाधारण तक का सफर कुछ इस तरह किया कि लाखों अति साधारण आज अत्यन्त असाधारण बन सके। फिर भी हमारे समाज के एक बड़े वर्ग के मन में अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए भेदभाव का भाव अभी तक मिटा नहीं है। एक ही उदाहरण समझिये। हमारे देश में 9 करोड़ से अधिक वाल्मीकि हैं। लेकिन हर शहर, संस्थान और गांव में सफाई कर्मचारी के नाते वाल्मीकि ही क्यों मिलते हैं ? दुनिया में इससे बढ़कर अभिशाप किसी और जाति को मिला है कि जो जन्मते ही सफाई कर्मचारी बन जाये ? पाकिस्तान की सेना ने पिछले दिनों एक विज्ञापन छापा था कि उन्हें सेना में सफाई कर्मचारी के लिए हिन्दू वाल्मीकि जाति के लोग चाहिये। हिन्दू धर्म की बात करने वाले लोगों का उस समय खून नहीं खौला। वह तो नरेंद्र मोदी की कौशल विकास और अनुसूचित जाति को कौशल क्षेत्र में लाने का नतीजा है कि भारत में अब वाल्मीकि युवक-युवतियां ग्राफिक डिजाइनर, सेल्स मैनेजर, सॉफ्टवेयर इंजीनियर ओर एमबीए भी दिख रहे हैं।

लेकिन मीडिया के क्षेत्र में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के युवाओं की विराट अनुपस्थिति किसी को खलती क्यों नहीं ? जो लोग सब क्षेत्रों में इस वर्ग के आरक्षण की मांग करते हैं वे मीडिया में उनकी अनुपस्थिति से परेशान क्यों नहीं होते ? कुल 28 प्रतिशत जनसंख्या होने के बावजूद अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग मीडिया में एक प्रतिशत से भी कम दिखते हैं। डॉ. भीमराव अम्बेडकर केवल सामाजिक परिवर्तन के ही पुरोधा नहीं थे बल्कि उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में वेदना के शब्दों का मीडिया धर्म निभाया और मूक नायक, बहिष्कृत भारत एवं अंग्रेजी में डिप्रेस्ड इंडिया जैसी पत्रिकाओं द्वारा अनुसूचित जाति समाज में स्वाभिमान और संघर्ष की अलख जगाई। उन्होंने कहा था कि भारत में एक समय पत्रकारिता मिशन होती थी जो जनता के दुख-दर्द को प्रकट करने के लिए निर्भीकता से सत्य को प्रकट करती थी लेकिन आज पत्रकारिता व्यवसाय में तब्दील हो गई है जो समझौते करती है और मुनाफे के लिये सच्चाई प्रकट करने से हिचकिचाती है। अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के दर्द को व्यक्त करने के लिए कितने संपादक व पत्रकार सामने आते हैं ? और कितने अपने यहां इस वर्ग के युवाओं को काम करने या प्रशिक्षण लेने का मौका देते हैं ?

वास्तव में भारत में धनपतियों के लिए हर प्रकार की शिक्षा के केंद्र खोले जाते हैं। करोड़पति लोग इतने बड़े-बड़े विद्यालय जिनमें वातानुकूलित कक्षाएं होती हैं तथा लाखों रुपये सालाना की फीस ली जाती है खोलते हैं ताकि ना तो उन्हें अपनी कमाई पर टैक्स देना पड़े और बिना विशेष मेहनत के उनका धन कई गुना बढ़ता रहे। इनमें 90-95 प्रतिशत हिन्दू ही होते हैं। पर वे अपने ही समाज के उस वर्ग की शिक्षा के लिए प्रयास करते कभी दिखते नहीं। जो वर्ग ना केवल सबसे ज्यादा रामभक्त है बल्कि आदि रामकथा के रचयिता कवि भगवान वाल्मीकि के वंशज हैं। वाह रे राम भक्तों !! राम की भक्ति में सबसे आगे पर राम के भक्तों की दुर्दशा में भी सबसे आगे ? ऐसी परिस्थिति में देश के कुछ संपादकों व पत्रकारों ने अपनी पहल पर एक ऐसे डॉ. अम्बेडकर मीडिया सशक्तीकरण विद्यालय की रचना की है जिसमें देश के श्रेष्ठ पत्रकारिता विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम ही नहीं बल्कि आर्टिफिशल इंटेलीजेंस और एथीकल हेकिंग और साइबर सिक्योरिटी के विषय भी शामिल किये हैं। सबसे पहले देहरादून, पुणे और गुवाहाटी के बाद पटना, औरंगाबाद और तमिलनाडु और उत्तर पूर्वांचल के राज्यों में भी इनकी शाखाएं खोलने की मांग है।

इन पंक्तियों के लिखे जाते समय वाल्मीकि समुदाय के अनेक युवाओं ने मीडिया में आने की इच्छा दर्शाने वाले फोन किये तो मुझे लगा जाति की कारा तोड़ना ही अम्बेडकर को सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। इससे बढ़कर देश और समाज पर कोई कलंक नहीं हो सकता कि किसी जाति को जन्मते ही उनके लिए सदियों से रूढ़िवादियों द्वारा निर्धारित कर्म सौंप दिया जाये। वह दिन इस देश के लिए सबसे बड़ा शौर्य और पराक्रम का दिन होगा जब हमारे समाज में सब लोग जाति के आधार पर भेदभाव को त्याग कर इस सिद्धांत पर काम करें कि जिसके हाथ में कौशल वही आगे बढ़ेगा और जिसके पास जाति का भेदभाव वह नीचे जायेगा। कौशल जाति नहीं पूछता। भगवान जाति नहीं पूछता। धर्म जाति नहीं पूछता। केवल हम ही लोग हैं जो धर्मराज से लेकर यमराज तक अपने देवी देवता को जातियों में बांट देते हैं।

मीडिया में अम्बेडकर वास्तव में सामाजिक समरसता और समता के लिए एक मीडिया सत्याग्रह प्रतीत होता है जिसमें जुड़ने के लिए हर जाति के लोग शामिल हो रहे हैं। वास्तव में यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि अगर इस देश में सबसे ज्यादा जाति रहित या जाति के भेदभाव से विमुक्त कोई समुदाय है तो वह मीडिया का समुदाय है। मीडिया सत्याग्रह के माध्यम से अनुसूचित जाति और जनजाति के युवा अपनी वेदना और संघर्ष को ही सिर्फ बेहतर ढंग से व्यक्त नहीं कर पायेंगे बल्कि समाज में समता का भाव उसी तीव्रता से फैला पायेंगे जिस तीव्रता के साथ संपादक एवं पत्रकार डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बढ़ाया था। इस मीडिया सत्याग्रह को रंगभेद और राजनीति के भेद से परे जिस प्रकार का समर्थन मिल रहा है वह कलम के धन और शब्द की शक्ति के लिए शुभ है।